

कर्तव्य, निमित्त और परिवेश यज्ञः श्रीकृष्णेर दर्शने पुनर्गठनमूलक शान्तिज्ञेय एक दार्शनिक विश्लेषण

**Tiasa Mondal**

**Former Guest Lecturer**

**Barasat Government College**

**Barasat, West Bengal, India**

**Email : [tiasamondal1998@gmail.com](mailto:tiasamondal1998@gmail.com)**

**<https://doi.org/10.5281/zenodo.19468343>**

**Abstract:**

ल्याटिन शब्द 'punire' (शान्ति देण्या) आबार् 'poena' (जर्मिना वा दण्ड), आबार् केड बलेन ओल्ड फ्रेक्श शब्द 'puniss' थेके विवर्तित ह्ये **Punishment** शब्दटि एसेछे। 1304 सालेर दिके **Punishment** शब्दर प्रथम व्यावहार लक्ष्य करा याय। शान्तिज्ञेय इतिहासे प्रतिकारायक (**Retributive**) ओ संशोधनायक (**Reformative**) तत्र दीर्घदिन धरे प्रभावशाली हलेओ, एहि दुइ तत्रुइ न्यायविचारर पूर्णाङ्ग व्याख्या दिते बर्या। प्रतिकारायक तत्रु शान्तिके “योग्य प्रतिफल” हिसेबे व्याख्या करे, या अनेक क्षेत्त्रे प्रतिशोधमूलक ह्ये ओठे एबं भुक्तभोगीर आरोग्य ओ सामाजिक सम्पर्क पुनर्गठनर प्रश्नके उपेक्षा करे। अपरदिके, संशोधनायक तत्रु अपराधीर परिवर्तन ओ पुनर्वासनर उपर गुरुत्व दिलेओ, ता भुक्तभोगीर न्यायविचारर दावि ओ सामाजिक क्षतिर गभीरताके यथायथाबे प्रतिफलित करते पारे ना।

एहि प्रबन्धे “Eco-Care Restorative Justice” नामे एकटि समन्वित दार्शनिक काठामो प्रस्ताव करा ह्येछे, या प्रतिकारायक, संशोधनायक एबं पुनर्गठनमूलक (**Restorative**) न्यायबोधके एकत्रित करे एबं एर सङ्गे परिवेशगत न्यायबोध (**Eco-Care**) युक्त करे। एहि तत्रे शान्तिके प्रतिशोध नय, वरं दायवद्धता, आरोग्य, सम्पर्क पुनर्गठन एबं परिवेशगत भारसाम्य पुनःस्थापनर एकटि नैतिक प्रक्रिया हिसेबे व्याख्या करा ह्येछे।

एछाड, प्रबन्धे **Bhagavad Gita**-एर नैतिक शिक्षार सङ्गे एहि तत्रे धारणागत सामञ्जस्य विश्लेषण करा ह्येछे, येखाने शान्तिके व्यक्तिगत प्रतिहिंसा नय, वरं कर्तव्यनिर्भर न्याय प्रतिष्ठार उपाय हिसेबे विवेचना करा ह्य। अतएव, एहि गबेषणा देखाय ये “Eco-Care Restorative Justice” तत्रु एकटि मानविक, सम्पर्कवित्तिक एबं परिवेश-सचेतन न्यायबोध उपस्थापन करे, आधुनिक समाजे न्यायविचारर पुनरुद्धारमूलक विचार व्यवस्था परिवेश, समाज ओ मानुषेर मध्ये एकटि प्रासङ्गिक ओ संभावनामय विकल्प दृष्टिभङ्गि प्रदान करे।

**Keywords:** शान्ति, प्रतिकारायक, संशोधनायक, पुनर्गठनमूलक, कर्म, यज्ञनीति, गीता।

## **Introduction:**

দাশনিকভাবে শাস্তির প্রশ্নটি সবসময়ই গুরুত্বপূর্ণ। অপরাধ ঘটলে সমাজ কীভাবে প্রতিক্রিয়া জানাবে এই প্রশ্নের উত্তর খুঁজতে গিয়েই বিভিন্ন শাস্তিতত্ত্বের উদ্ভব। প্রতিকারাত্মক তত্ত্ব বলে, অপরাধী শাস্তির যোগ্য; অপরদিকে সংশোধনাত্মক তত্ত্ব বলে, অপরাধীকে সংশোধন করা উচিত কিন্তু এই দুই তত্ত্বই অসম্পূর্ণ। প্রতিকারাত্মক তত্ত্ব প্রতিশোধমূলক হয়ে উঠতে পারে, আর সংশোধনাত্মক তত্ত্ব অনেক সময় ভুক্তভোগীর অবস্থানকে গুরুত্ব দেয় না। তাই প্রয়োজন একটি নতুন দৃষ্টিভঙ্গি, যা শাস্তিকে আরও মানবিক, সম্পর্কভিত্তিক এবং কর্তব্যপারায়ণ পরিবেশ-সচেতনভাবে ব্যাখ্যা করবে। প্রথমত, প্রতিকারাত্মক ও সংশোধনাত্মক শাস্তিতত্ত্বের প্রধান সীমাবদ্ধতাগুলি কী, এবং কেন এই তত্ত্বগুলো এককভাবে ন্যায়বিচারের পূর্ণাঙ্গ ব্যাখ্যা দিতে অক্ষম? দ্বিতীয়ত, “Eco-Care Restorative Justice তত্ত্ব কীভাবে অপরাধী, ভুক্তভোগী, সমাজ এবং পরিবেশ এই বিভিন্ন স্তরকে একত্রে বিবেচনা করে একটি সমন্বিত ন্যায়বোধ গঠন করে? তৃতীয়ত, Bhagavad Gita-এর নৈতিক শিক্ষা কীভাবে শাস্তির একটি কর্তব্যনির্ভর ও নৈতিকভাবে সংযত রূপকে সমর্থন করে, এবং তা তত্ত্বের সঙ্গে কীভাবে সামঞ্জস্যপূর্ণ? উদ্ধৃত গবেষণায় আমি তিনটি প্রশ্নের উত্তর খোঁজা ও তাত্ত্বিক জ্ঞানের মাধ্যমে সমাধানের চেষ্টা করেছি।

## **শাস্তি তত্ত্বের সাথে গীতার যোগসূত্র ও পর্যালোচনা:**

প্রতিকারাত্মক তত্ত্বের সীমাবদ্ধতা গুলি হলো এই তত্ত্বে শাস্তির মূল ভিত্তি হল “যোগ্য শাস্তি” (desert)। অর্থাৎ, অপরাধী যে অপরাধ করেছে, তার উপযুক্ত শাস্তি তাকে পেতে হবে। এটি শাস্তিকে প্রতিশোধের রূপ দিতে পারে। ভুক্তভোগীর মানসিক আরোগ্যকে গুরুত্ব দেয় না। অপরাধীর পরিবর্তনের সম্ভাবনা উপেক্ষিত হয়। সমাজে সহিংসতার চক্র বজায় থাকতে পারে। অতএব, এটি ন্যায়বিচারের একটি সংকীর্ণ ধারণা প্রদান করে। সংশোধনাত্মক তত্ত্বের সীমাবদ্ধতা হল অপরাধীকে একজন পরিবর্তনযোগ্য মানুষ হিসেবে দেখা হয়। শাস্তির উদ্দেশ্য হলো তাকে সংশোধন করা। ভুক্তভোগীর কষ্ট ও ন্যায়বিচারের দাবি উপেক্ষিত হতে পারে। সব অপরাধীর ক্ষেত্রে সংশোধন সম্ভব নয়। গুরুতর অপরাধে এটি অপ্রতুল মনে হতে পারে। সামাজিক ও সম্পর্কগত ক্ষতির দিকটি উপেক্ষিত থাকে। অতএব, এটি মানবিক হলেও পূর্ণাঙ্গ নয়। তাই নতুন তত্ত্বের প্রয়োজনীয়তা রয়েছে, উপরের দুই তত্ত্বই শাস্তিকে মূলত অপরাধী কেন্দ্রিক করে দেখে। কিন্তু বাস্তবে অপরাধে ভুক্তভোগী ক্ষতিগ্রস্ত হয়। সমাজে সম্পর্ক ভেঙে যায়। অনেক ক্ষেত্রে প্রকৃতিও ক্ষতিগ্রস্ত হয়। তাই একটি নতুন তত্ত্ব প্রয়োজন, যা এই তিনটি স্তর অপরাধী, ভুক্তভোগী এবং প্রকৃতি সবকেই বিবেচনায় নেবে। বলা যায় সম্পর্ক পুনর্গঠন যা হল নতুন তত্ত্ব Restorative justice এর মূল ধারণা হলো অপরাধ মানে সম্পর্কের ভাঙনা। তাই শাস্তির উদ্দেশ্য হওয়া উচিত সেই সম্পর্ক পুনর্গঠন করা। অপরাধী, ভুক্তভোগী ও সমাজের মধ্যে সংলাপ, ক্ষতির স্বীকারোক্তি ও ক্ষমা প্রার্থনা, বিশ্বাস পুনর্গঠন। এটি শাস্তিকে প্রতিশোধ থেকে সরিয়ে আরোগ্যের প্রক্রিয়া হিসেবে প্রতিষ্ঠা করে। Care Ethics: যত্ন ও সহানুভূতির ন্যায়বিচার অনুযায়ী নৈতিকতা শুধু

नियम नय, वरं सम्पर्क ओ सहानुभूतिर उपर निर्भरशील। यार वैशिष्ट्यगुलि हल सहानुभूति ओ मानविकता, पारस्परिक निर्भरता, दायित्वबोध एटि विचारव्यवस्थाले कठोरता थेके सरिये मानविक ओ संवेदनशील करे तोले। प्रकृतिर प्रति न्यायविचार प्रचलित शास्त्रितत्वे प्रकृतिके विवेचना करा हय ना। किन्तु आधुनिक समये परिवेश ध्वंस एकटि बड नैतिक समस्या। प्रकृतिके “भुक्तभोगी” हिसेबे देखा, परिवेशगत क्षतिर प्रतिकार, **ecological balance** पुनःस्थापना। एटि न्यायविचारेर परिसरके मानुषेर बाहरे प्रसारित करे। या थेके एकटि नतून समन्वित तत्त्व उपस्थित हयैछे **Eco-Care Restorative Justice** प्रस्तावित तत्वे बला हयैछे शास्त्रि प्रतिशोध नय, शास्त्रि हल आरोग्य, यत्न, परिवेश पुनर्गठन एहि धारणार मूल उपदानगुलि हल न्यायविचार (**Retributive**), संशोधन (**Reformative**), सम्पर्क पुनर्गठन (**Restorative**), प्रकृतिर यत्न (**Eco-Care**) आधुनिक समाजे एहि तत्वेर प्रयोग अति प्रासङ्गिक विचारव्यवस्थाय **restorative practices**, कारागारे पुनर्वासन ओ संलाप, परिवेश आहिन शक्तिशाली करा, सामाजिक न्यायविचार प्रतिष्ठा। निडजिल्यान्डे आदिवासी **Māori** जनगोष्ठीर प्रथागत विचारव्यवस्थार उपर भित्ति करे “**Restorative Justice**”—एर एकटि कार्यकर मडेल गडे उठैछे। विशेषत **Family Group Conference (FGC)** पद्धति, या 1989 सालेर **Children, Young Persons, and Their Families Act**—एर माध्यमे प्रवर्तित हय, अपराध विचारव्यवस्थाय एकटि गुरुत्वपूर्ण परिवर्तन आने।

एहि पद्धतिते अपराधी, भुक्तभोगी, परिवार ओ सम्प्रदायेर सदस्यरा एकत्रित हयै एकटि संलाप प्रक्रियार माध्यमे अपराधेर प्रभाव आलोचना करे एवंग क्षतिपूरण ओ पुनर्गठनेर उपाय निर्धारण करे। एर माध्यमे केवल आहिन शक्ति प्रदान करा हय ना; वरंग सामाजिक सम्पर्क पुनर्गठन एवंग भुक्तभोगीर मानसिक आरोग्यकेओ गुरुत्व देओया हय।

एहि उदाहरणटि “**Eco-Care Restorative Justice**” तत्वेर सङ्गे आंशिकभाबे सामञ्जस्यपूर्ण, कारण एखाने शास्त्रिके प्रतिशोध हिसेबे नय, वरंग सम्पर्क पुनर्गठनेर प्रक्रिया हिसेबे देखा हय। यदिओ एहि व्यवस्थार परिवेशगत न्याय सरासरि अन्तर्भुक्त नय, तवुओ एटि देखाय ये विचारव्यवस्थाले मानविक ओ सम्पर्कभित्तिक करा संभव।

“**Eco-Care Restorative Justice**” ओ गीतार दार्शनिक सामञ्जस्य देखा यय: प्रस्तावित लेखनीते **Eco-Care Restorative Justice** या शास्त्रिके प्रतिशोध नय वरंग आरोग्य, दायवद्धता एवंग सम्पर्क पुनर्गठनेर प्रक्रिया हिसेबे व्याख्या करे, ता **दार्शनिकभाबे Bhagavad Gita**—एर नैतिक शिक्षार सङ्गे गुरुत्वपूर्ण सामञ्जस्य प्रदर्शन करे। गीतय नैतिक कर्म प्रतिशोधमूलक नय; वरंग ता धर्म (कर्तव्य) पालनेर माध्यमे नैतिक शृङ्खला रक्षार उपर निर्भरशील। एहि दृष्टिभङ्गि **Eco-Care** तत्वेर सङ्गे सङ्गतिपूर्ण, येखाने न्यायविचारके प्रतिक्रिया नय, वरंग व्यक्ति, समाज एवंग प्रकृतिर मध्ये भारसाम्य पुनःस्थापनेर प्रक्रिया हिसेबे देखा हय। एहाडाओ, गीतय अन्तर्दृष्टिगत परिवर्तनेर उपर विशेष गुरुत्व देओया हयैछे, येखाने मानुषके क्रोध, लोभ इत्यादि प्रवृत्ति नियन्त्रण करे आत्म-उन्नतिर पथे एगोते बला हय। एकहभाबे, अपराधीर नैतिक दायवद्धता एवंग अभ्यन्तरीण परिवर्तनके शास्त्रि केन्द्रबिन्दु

हिसेबे विवेचना करे। एह तद्धेर सम्पर्कभित्तिक न्यायबोध गीतार सामाजिक दायित्व ओ पारम्परिक निर्भरतार धारणार सङ्गे सामञ्जस्यपूर्ण, येखाने ब्यक्तिर कर्तव्य समाजेर सामग्रिक सुशुद्धलता बजाय राखते सहायता करे। गीतार मानुष ओ प्रकृतिर मध्यकार गतीर आन्तःसम्पर्क (प्रकृति धारणा) तुले धरा हयेछे, या Eco-Care तद्धेर परिवेशगत न्यायबोधेर सङ्गे सङ्गतिपूर्ण। एखाने न्यायविचारेर क्षेत्र केबल मानवसमाजे सीमाबद्ध नय, बरंग परिवेशगत भारसाम्य पुनःस्थापनकेओ अन्तर्भुक्त करे।

**Eco-Care Restorative Justice** तद्ध यदिओ शान्तिके आरोग्य ओ पुनर्गठनेर प्रक्रिया हिसेबे ब्याख्या करे, तबुओ किछु क्षेत्रे शान्तिर प्रयोजनीयता अस्वीकार करा याय ना। एह प्रेक्षिते **Bhagavad Gita**-एर नैतिक शिक्षा एकटि गुरुत्वपूर्ण दार्शनिक भित्ति प्रदान करे। गीतार देखा याय ये, अन्याय प्रतिरोध एवं न्याय प्रतिष्ठार जन्य कर्तव्य पालन अपरिहार्य, एमनकि सेह कर्तव्य कठोर कर्मेर सङ्गे युक्त हलेओ श्रीकृष्ण अर्जुनके तार स्वधर्म पालन करते उपदेश देन, या नैतिक शुद्धला रक्षार जन्य अपरिहार्य (**Easwaran, 2007**)। एह दृष्टिभङ्गि निर्देश करे ये, शान्ति ब्यक्तिगत प्रतिशोध नय, बरंग न्याय रक्षार एकटि दायित्वपूर्ण प्रक्रिया। अतएव, शान्तिर एकटि सीमित ओ नैतिक व्यवहार, या प्रतिशोध नय बरंग सामाजिक ओ नैतिक भारसाम्य बजाय राखे, या Eco-Care Restorative Justice न्याय तद्धेर सङ्गे सामञ्जस्यपूर्ण।

**Bhagavad Gita** र एकटि श्लोके श्रीकृष्ण अर्जुनके बलेन “परधर्म अपेक्षा स्वधर्म श्रेय”। एह शिक्षार मूल कथा हलेओ, प्रत्येक मानुषेर निजेर स्वभाव (स्वभाव/प्रकृति) ओ सामाजिक अवस्थान अनुयायी एकटि निर्दिष्ट कर्तव्य (धर्म) থাকे, सेटिह तार स्वधर्म। अर्जुनेर क्षेत्रे, तिनि एकजन ऋत्रिय (योद्धा)। तार स्वधर्म हलेओ न्यायेर पक्षे युद्ध करा एवं अन्यायेर विरुद्धे दौड़ाने। किन्तु कुरुक्षेत्रेर युद्धे आन्वीय-स्वजनके देखे तिनि दुर्बल हये पडेन एवं युद्ध ना करार सिद्धान्त निते चान। एह अवस्थाय श्रीकृष्ण ताके बोबान ये, युद्ध थेके सरे दौड़ाने तार जन्य परधर्म (अन्येर धर्म) ग्रहण करार मतो येमन सन्नासीर मतो निर्लिप्त जीवन बेहे नेओया। श्रीकृष्णेर युक्ति हल निजेर स्वभावविरुद्ध काज करा आत्तिक ओ नैतिकभावे ऋतिकर। मानुष यखन निजेर प्रकृतिर विरुद्धे गिये अन्येर पथ अनुसरण करे, तखन तार मध्ये द्वन्द्व, अस्थिरता ओ विभ्रान्ति तैरि हय। किन्तु निजेर स्वधर्म पालन करले, ता यत कठिन वा असम्पूर्णहै होक, ता ब्यक्तिर अन्तर्गत सतार सङ्गे सामञ्जस्यपूर्ण থাকे।

एखाने “असम्पूर्ण हलेओ स्वधर्म पालन उत्तम” एह कथाटि विशेष गुरुत्वपूर्ण। कारण, श्रीकृष्ण बोबाते चान ये, सफलता वा व्यर्थता नय, बरंग सतता ओ आन्तरिकता दिये निजेर कर्तव्य पालन करै आसल। अन्येर काज निखुंताभावे करलेओ ता प्रकृत उन्नति आने ना, यदि ता निजेर स्वभावेर सङ्गे सङ्गतिपूर्ण ना हय। दार्शनिक दृष्टिते, एह धारणाटि मानुषेर स्वातन्त्र्य ओ नैतिक स्वायत्तशासनके गुरुत्व देय। प्रत्येक मानुष आलादा गुण (सद्, रज, तम) ओ प्रवृत्ति निये जन्माय। सेह अनुयायी तार कर्तव्यओ आलादा। तैह एक ब्यक्तिर जन्य या सठिक,

অন্যের জন্য তা নাও হতে পারে। এছাড়া, স্বধর্ম পালনের মধ্যে একটি সামাজিক তাৎপর্যও আছে। যদি প্রত্যেকে নিজের দায়িত্ব সঠিকভাবে পালন করে, তাহলে সমাজের সামগ্রিক শৃঙ্খলা বজায় থাকে। অর্জুন যদি যুদ্ধ না করতেন, তাহলে অন্যায়ের জয় হতো এবং ধর্ম (ন্যায়) প্রতিষ্ঠা পেত না।

**Prabhupada, A. C. Bhaktivedanta Swami. (2020). Srimad Bhagavad Gita (Revised Affordable Edition) (Bhakticharu Swami, Trans.).** বইটির অনুসারে, শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে বলেছিলেন:

শ্লোক 30, পৃষ্ঠা 179

ময়ি সর্বাণি কর্মাণি সংন্যস্যাত্মাচ্চেতসা।

নিরাশীর্নির্মমো ভূত্বা যুদ্ধাশ্ব বিগতজ্বরঃ ॥ ৩০ ॥

অর্থাৎ হে অর্জুন, অধ্যাত্মচেতনাসম্পন্ন হয়ে তোমার সমস্ত কর্ম আমাকে সমর্পণ কর এবং নিষ্কাম, মমতাসূন্য ও শোকসূন্য হয়ে তুমি যুদ্ধ কর।

শ্লোক ৪২, পৃষ্ঠা 242

তস্মাদজ্ঞানসম্ভূতং হংস্বং জ্ঞানাসিনাত্মনঃ।

ছিত্ত্বনং সংশয়ং যোগমাতীষ্ঠোত্তিষ্ঠ ভারত ॥ ৪২ ॥

অতএব, তোমার হৃদয়ে যে অজ্ঞানপ্রসূত সংশয়ের উদয় হয়েছে, তা জ্ঞানরূপ খড়োর দ্বারা ছিন্ন করা হে ভারত, যোগাশ্রয় করে তুমি যুদ্ধ করবার জন্য উঠে দাঁড়াও।

সবশেষে, শ্রীকৃষ্ণের এই শিক্ষা কেবল যুদ্ধক্ষেত্রেই সীমাবদ্ধ নয় এটি জীবনের প্রতিটি ক্ষেত্রে প্রযোজ্য। একজন শিক্ষক, ছাত্র, গবেষক, শ্রমিক ইত্যাদি সবারই নিজস্ব কর্তব্য আছে। সেই কর্তব্য নিষ্ঠার সঙ্গে পালন করাই প্রকৃত ধর্ম।

আলোচনা:

প্রথম প্রশ্নের সমাধান হিসাবে বলা হয় (প্রতিকারাত্মক ও সংশোধনাত্মক তত্ত্ব কেন অসম্পূর্ণ?) বিশ্লেষণ থেকে স্পষ্ট যে, প্রতিকারাত্মক (Retributive) তত্ত্ব শাস্তিকে মূলত “যোগ্য প্রতিফল” হিসেবে বিবেচনা করে, যা অনেক ক্ষেত্রে প্রতিশোধমূলক হয়ে ওঠে এবং ভুক্তভোগীর মানসিক আরোগ্য বা সামাজিক সম্পর্ক পুনর্গঠনের প্রশ্নকে উপেক্ষা করে। অপরদিকে, সংশোধনাত্মক (Reformative) তত্ত্ব অপরাধীর পরিবর্তন ও পুনর্বাসনের উপর গুরুত্ব দিলেও, তা ভুক্তভোগীর ন্যায়বিচারের দাবি এবং সামাজিক ক্ষতির গভীরতাকে যথাযথভাবে প্রতিফলিত করতে ব্যর্থ হয়। অতএব, উভয় তত্ত্বই একপাক্ষিক, যা একটি অপরাধীকে শাস্তির কেন্দ্রবিন্দুতে রাখে, অন্যটি অপরাধীর সংশোধনকে প্রাধান্য দেয়; কিন্তু কোনোটিই অপরাধের বহুমাত্রিক প্রভাবকে সম্পূর্ণভাবে ধারণ করতে পারে না।

द्वितीय (Eco-Care Restorative Justice) कीभावे समन्वित काठामो गठन करे? प्रश्नेर समाधाने बला याय, अपराधीके दायबद्ध करा हय ये क्षेत्रे ता हल **Retributive element**, परिवर्तनेर सुयोग राखा हय याके बला हस्छे **Reformative element**, एहि सीमाबद्धतागुलो अतिक्रम करे एकटि समन्वित न्यायबोध उपस्थापन करे, डुज्जुभोगीर आरोग्य ओ सम्पर्क पुनर्गठनके गुरुत्व देओया हय येहि क्षेत्रे ता हल **Restorative element** एवं परिवेशगत क्षतिर प्रतिकार ओ भारसाम्य पुनःस्थापनके अंतर्भूक्त करा हय ताके बलते पारि **Eco-Care element** फले एहि तत्व अपराधीके केवल आइनगत लडधन हिसेबे नय, वरं सम्पर्क ओ परिवेशेर भाङन हिसेबे व्याख्या करे एवं शान्तिके एकटि आरोग्यमूलक ओ नैतिक पुनर्गठनेर प्रक्रियाय रूपान्तरित करे।

तृतीय प्रश्नेर समाधाने बलते पारि गीतार नैतिक शिक्षा कीभावे **Eco-Care Restorative Justice** तत्वके समर्थन करेओ नतुन एकटि तत्व ओ धारना युक्त करेन। **Bhagavad Gita**-एर नैतिक शिक्षाय देखा याय ये, न्याय प्रतिष्ठांर जन्य धर्म (कर्तव्य) पालन अपरिहार्य। एखाने शान्ति व्यक्तिगत प्रतिशोध नय; वरं नैतिक शृङ्खला रक्षार एकटि दायित्वपूर्ण कर्म। गीताय श्रीकृष्ण अर्जुनके तार स्वधर्म पालनेर जन्य उद्बुद्ध करेन, या निर्देश करे ये अन्याय प्रतिरोधे प्रयोजनीय कठोर पदक्षेप ग्रहण नैतिकभावे वैध, यदि ता व्यक्तिगत आसक्ति वा प्रतिहिंसा थेके मुक्त থাকे (Easwaran, 2007)। एहि दृष्टिभङ्गि **Eco-Care Restorative Justice** तत्वेर सङ्गे सामञ्जस्यपूर्ण, येखाने शान्तिके प्रतिशोध नय, वरं न्याय रक्षा, दायबद्धता एवं भारसाम्य पुनःस्थापनेर एकटि प्रक्रिया हिसेबे विवेचना करा हय। पाशापाशि, गीतार आन्वित्यन्तण, सहमर्मिता एवं प्रकृतिर सङ्गे मानवेर आन्तःसम्पर्केर धारणा एहि तत्वेर यत्ननैतिकता ओ परिवेशगत न्यायबोधके दार्शनिकभावे समर्थन करे।

### Conclusion:

प्रतिकारात्मक ओ संशोधनात्मक तत्व शान्तिर गुरुत्वपूर्ण दिक तुले धरलेओ, तारा पूर्णाङ्ग नय। **Eco-Care Restorative Justice** तत्व एहि सीमाबद्धतागुलो अतिक्रम करे एकटि नतुन दृष्टिभङ्गि प्रदान करे। एहि तत्वे शान्ति आर प्रतिशोध नय, वरं: आरोग्य, दायित्व ओ सम्पर्क पुनर्गठनेर प्रक्रिया। अतएव, एहि एकटि मानविक, दार्शनिक एवं परिवेश सचेतन न्यायविचारेर नतुन पथ निर्देश करे। प्रथमत, प्रतिकारात्मक ओ संशोधनात्मक तत्व एककभावे असम्पूर्ण, कारण तारा अपराधेर बहुमात्रिक प्रभाव सम्पूर्णभावे व्याख्या करते पारे ना। द्वितीयत, “**Eco-Care Restorative Justice**” शान्तिके प्रतिशोध नय, वरं आरोग्य, दायबद्धता ओ सम्पर्क-पुनर्गठनेर प्रक्रिया हिसेबे प्रतिष्ठा करे।

तृतीयत, **Bhagavad Gita**-एर नैतिक शिक्षा एहि तत्वेर सङ्गे सामञ्जस्य रेखे शान्तिके कर्तव्यनिर्भर न्याय प्रतिष्ठांर उपाय हिसेबे निर्देश करे। कृष्ण अर्जुनके ये शान्तिर कथा बलेन ता हल धर्मरक्षार जन्य कर्तव्यभित्तिक, निष्काम, व्यक्तिगत-आसक्तिहीन एवं नैतिक भारसाम्य पुनःप्रतिष्ठाकारी शान्तिमूलक कर्म। या **Bhagavad Gita**-एर कर्तव्यनिर्भर नैतिक दर्शनेर सङ्गे धारणागतभावे

सामंजस्यपूर्ण एवं आधुनिक समाजे न्यायविचारेर एकटि विकल्प ओ उन्नत पथ निर्देश करे। या गीतार नैतिक शिक्षार सङ्गे सामंजस्यपूर्ण, शक्ति दिलेओ 'आमि शक्तिदाता' एहि अहं थाका उचित नय। श्रीकृष्ण अर्जुनके बलेन तुमि शुधु माध्यम। अधर्मेर दमने "शक्ति दाओ, कारण एटि कर्तव्य" "शक्ति एड़ानो नय, वरं सठिकभावे प्रयोग कर। अतएव "कर्तव्य, निमित्त ओ परिवेश यत्नः श्रीकृष्णेर दर्शन" एहि नतुन धारनाटिेर प्रस्तावना करार चेष्टा करेछि। आधुनिक समाजे न्यायविचार, सामाजिक सम्पर्क एवं परिवेशगत दायित्वबोधेर प्रेक्षापटे एकटि अत्यन्त प्रासङ्गिक, प्रयोजनीय एवं भविष्यतेर जन्य एकटि गुरुत्वपूर्ण दार्शनिक भित्ति हिसेवे विवेचित हते पारे।

### References:

1. Bhattacharya, Samarendra. (2017). Introduction to Philosophical Analysis. Book Syndicate Pvt. Ltd.
2. Gupta, Dikshit. (2025). Nitishastra (Ethics). Paschim Banga Rajya Pustak Parishad.
3. Pali, B., Tepper, F., & Forsyth, M. (2022). The Palgrave handbook of environmental restorative justice. Publisher: Palgrave Macmillan.
4. Prabhupada, A. C. Bhaktivedanta Swami. (2020). Srimad Bhagavad Gita (Revised Affordable Edition) (Bhakticharu Swami, Trans.).
5. Prabhupada, A. C. Bhaktivedanta Swami. (2019). The Path to Self-Realization (Bhakticharu Swami, Trans.). Bhaktivedanta Book Trust.